रात्रिक्लास 20/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

रूहानी बच्चे एक बाप की याद में बैठे हो ना; क्योंकि बच्चों को पावन बनना है। पतित–पावन बाप को ही कहा जाता है। तो बच्चों को पारलौकिक बाप को ही याद करना है और एक को याद करना है। इसको कहा जाता है अव्यभिचारी याद। दुनिया में अनेकों को याद करते हैं। कोई कृष्ण को, कोई राम को याद करते हैं; परंतु बेहद का बाप कहते हैं मामेकं याद करो। देह के सभी संबंध छोड़ो। कोई भी धर्म वाला हो उनको यह समझाना है, अपन को आत्मा समझो; क्योंकि सभी भाई हैं और बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। भारत पावन था, अभी पतित है। पावन एक भी नहीं। पावन को राम राज्य, पतित को रावण राज्य कहा जाता है। मनुष्य मनुष्य को पावन बना नहीं सकते। सर्व को पावन बनाने वाला सर्व का सद्गति दाता एक बाप ही है। अभी कलियुग पतित, पुरानी दुनिया है। इसको विषियस वर्ल्ड कहा जाता है। नई दुनिया के यह ल॰ना॰ मालिक हैं। एक ही इन देवी–देवताओं का राज्य था। वायसलेस थे। अभी तो वह धर्म है नहीं। भारतवासियों को कुछ भी पता नहीं है, आखरीन में यह हैं कहाँ। बाप समझाते हैं यह 84 जन्म लेते हैं। पहले शांतिधाम से आते हैं। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। अभी है कलियुग, जिसको रावण राज्य कहा जाता है। दशहरे पर रावण को जलाते हैं। इस समय भारत में रावण राज्य अर्थात् विषियस राज्य है। रावण के दो सिर हैं ना। रावण विकार को कहा जाता है। इन ल॰ना॰ में कोई विकार नहीं। अभी है पतित गृहस्थ धर्म। भारत पावन था तो बहुत ऊँच था। अभी पतित होने कारण नीच, कंगाल, इनसॉलवेंट है। इनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। अभी सभी हैं विकारी। भारत है इस समय भ्रष्टाचारी। यथा राजा–रानी तथा प्रजा..... सतयुग में सभी मालिक थे। नई दुनिया बाप ही स्थापन करते हैं। वह बाप ही पतित–पावन है। अभी सभी पतित हैं। एक भी पावन नहीं; क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। इन्हों को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। विकार की बात ही नहीं। भारतवासी यह नहीं समझते; क्योंकि गिरे हुये हैं। रामराज्य है यथा राजा–रानी तथा प्रजा दैवी स्वभाव। यहाँ तो है प्रजा का राज्य। इनको आसुरी राज्य कहा जाता है। वह ईश्वरीय राज्य है। आसुरी राज्य रावण स्थापन करते हैं। वह ईश्वर स्थापन करते हैं। तो अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो। गीता से आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हुई। तो बाप ने ही यह आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन किया। अभी विनाश का समय सामने है। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरानी दुनिया और नई दुनिया का बीच। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना। नई दुनिया में इनका ही राज्य होता है। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। विनाश नज़दीक है। पावन ज़रूर बनना है, नहीं तो पापात्माओं को सज़ा भोगनी पड़ेगी। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो पाप भस्म हों। यह है योग अग्नि। काम चिक्षा पर चढ़ने से सभी काले मुँह वाले बंदर बन गये हैं। इनमें 5 विकार बंदर से भी बदतर हैं। कलियुग है विकारी राज्य। बाप आकर निर्विकारी बनाते हैं। भारत है सबसे ऊँच तीर्थ। बाप को सर्व की सद्गति करने भारत में ही आना पड़ता है। सतयुग को दिन कहा जाता है। रात है भक्ति। रात में धक्का खाते रहते हैं। वह सभी करते–2 दुर्गति हुई है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है, बाकी सभी शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। ज्ञान के शास्त्र होते ही नहीं। तो बाप बैठ यह सभी बातें समझाते हैं। वह सभी हैं मनुष्य मत पर। तुम हो अभी श्रीमत पर। अनेक मत से दुर्गति, एक ईश्वरीय मत से सद्गति होती है। आधा कल्प सद्गति में रहते हैं। फिर अनेक गुरु होते हैं। वह सभी डुबोते हैं। एक बाप ही पार ले जाते हैं। सुख की स्थापना बाप ही करते हैं। राम–राज्य सतयुग–त्रेता को कहा जाता है। द्वापर–कलियुग को कहा जाता है रावण राज्य। अभी पहले–2 बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। आत्माभिमानी बनना है, तो अपन को आत्मा समझना चाहिए। उल्टी समझने से उल्टा बन जाते हैं। इस समय सभी उल्टा लटके हुये हैं। होना चाहिए पहले आत्मा, पीछे शरीर। आत्मा कहती है एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ। इस योग अग्नि से तुम पवित्र बन जावेंगे। अभी तुम अपनी स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए महाभारत की लड़ाई है। योगबल से तुम विश्व पर राज्य करेंगे। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।